ध्यान शक्ति

सृष्टि में जो है वह सब शक्ति हा है। प्रत्येक वस्तु तथा प्राणी में चेतना तथा प्राणशक्ति का मिश्रण है। हम केवल बाहर से दिखने वाले स्थूल शरीर मात्र नहीं, हमारे भातर शक्ति के असंख्य कण छिपे हुए है।

जिस प्रकार घूँघट में अधेरा होता है और उसे हटा देने से पूरी तरह रोशनी फैल जाती है वैसे ही प्राणशक्ति का प्रकाश है। तब प्राण शक्ति का चित्र विचित्र वैभव ही है।

अब यह समझने का समय आ गया है कि घूँघट के पीछे रहने वाले वीर है, घूँघट भी निकालने का समय आ गया है।

घूँघट के पीछे के वीर को दिखाने की शक्ति केवल ध्यान में है। उसे अपनाने से घूँघट का भाव दूर हो जाता है, ध्यान शक्ति से प्राण शक्ति और भी बढ़ जाती है, संकल्प शक्ति का वर्द्धन होता है। समस्त भुवन लोको की सृष्टि का मूल यह ध्यान शक्ति है। यह मानव को माधव बना देती है।

हमारा ध्येय है आनन्द प्राप्ति और आनन्द सच्चाई में है। ध्यान सच दिखाता है। मनुष्य की आयु को ध्यान शक्ति ही बढ़ा सकती है।

मनुष्य को अष्टदरिद्रता से निकालकर ध्यान शक्ति उसे अष्ट सिद्धियाँ प्रदान करती है। निरन्तर ध्यान साधना से ही उनकी प्राप्ति होती है। ध्यान साधना का मतलब आनापानसति-विपस्सना है। सभी लोगों को ध्यानी बनाना ही पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी के लोगों का संकल्प और एकमात्र ध्येय है।

सभी लोग इस ध्यान शक्ति को प्राप्त करें फिर अन्य लोगों को भा अपनी शक्ति देकर उसका विस्तार करें। यही मेरी आकांक्षा है।